P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-5* January- 2022
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में सामंजस्य क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of Adjustment Ability in Secondary School Learners

Paper id: 16130, Submission Date: 12/01/2022, Acceptance Date: 23/01/2022, Publication Date: 24/01/2022

गरिमा शर्मा
शोधार्थी
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुझुनू, राजस्थान, भारत

रतन लाल भोजक
निर्देशक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुझुनू, राजस्थान, भारत

सारांश

वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा में अनेक परिवर्तन हुयें है जिनका प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज में दिखाई देता है। शिक्षा व्यक्तित्व विकास का आधार स्तंम्भ है जो बालक-बालिकाओं के व्यवहार में परिमार्जन करके उन्हे सामाजिक जीवन में कुशलता प्रदान करती है। शिक्षा बालक के जीवन स्तर में सुधार करता है। शोध के आधार पर संवेगात्मक, विद्यालय एवं स्वास्थ्य स्तर में समानता पायी गयी है। जबकि परिवार और सामाजिक के क्षेत्र में अंतर पाया गया है। शासकीय और अशासकीय विद्यालय के शिक्षार्थियों का सामंजस्य स्तर समान पाया गया है।

In the present circumstances, many changes have taken place in education, whose direct and indirect effects are visible in the society. Education is the cornerstone of personality development, which improves the behavior of boys and girls and provides them skills in social life. Education improves the standard of living of the child. On the basis of research, similarity has been found in emotional, school and health v level. Whereas differences have been found in the field of family and social.The adjustment level of learners of government and non-government schools is found to be similar.

मुख्यशब्द - सामंजस्य क्षमता।
Keyword - Adjustment ability.

प्रस्तावना

अध्ययन-अध्यापन एक व्यवहारिक प्रक्रिया है। जिसका लक्ष्य बालक में वातावरण के साथ तारतम्य बैठा कर योग्य नागरिक गुणों का विकास करना है। मानव जीवन कतिपय प्राकृतिक नियमों द्वारा शासित होता है। बालक की कुछ प्राकृतिक आवश्यकतायें होती है जो उसके अस्तित्व के लिये आवश्यक है। बालक जन्म से ही कोरे कागज की भाँति उत्पन्न होता है। मनोवैज्ञानिको की धारणा है कि बालक के अन्दर दो ऐसी मूल-प्रवृतियाँ है जो उसके अस्तित्व की रक्षा करती है।

आत्म-संरक्षण और प्रजाति -संरक्षण।

अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए मानव को भोजन, पानी, वस्त्र एवं अनुकूल वातावरण की आवश्यकता पड़ती है। कई मनोवैज्ञानिक सामंजस्य को एक प्रक्रिया के रूप में देखते है कि कोई व्यक्ति अपने बाह परिवेश से किस प्रकार अन्तःक्रिया करता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों के साथ समायोजन कराते हुये उसे सत्यंम, शिवम् एवं सुन्दरम् के दर्शन कराने में सहयोग प्रदान कर सके। पूर्ण रूप से समायोजित व्यक्ति ही राष्ट्र और समाज के कल्याण में सहायक हो सकता है सामंजस्यपूर्ण व्यवहार का विकास मात्र शिक्षा के द्वारा ही किया जा सकता है, शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करना सीखता है शिक्षा न केवल सामंजस्य सिखाती है वरन् सामंजस्य शक्ति का वर्द्धन भी करती है। आज व्यक्ति का जीवन सरल नही रहा, दिन प्रतिदिन जटिल होता जा रहा है उसके ऊपर अनेक दबाव है, जो उसके अन्दर तनाव और कुण्ठा की स्थिति उत्पन्न करते है ऐसे में अपने तनाव और कुण्ठा को कम करने के लिए वह ऐसे कार्य कर देता है जो व्यक्तियों और समाज के लिये अनुचित होते है। बालक सक्रिय एवं वातावरण के साथ सामंजस्य करने वाले प्राणी होते है। समायोजन जीवन की आवश्यकता है। वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना बालक की मूल प्रवृत्तियों को सन्तुष्टि प्रदान करता है। जीवन में समायोजन क्षमता के परिवर्द्धन में शिक्षा का अमूल्य महत्व है। किशोर शिक्षार्थियों में सामंजस्य के विभिन्न क्षेत्रों को निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

परिवार क्षेत्र

परिवार सामाजिक संगठन की अभिन्न इकाई है। परिवार ही बालक को उचित भोजन, पानी, विश्राम, वायु, प्रकाश एवं आदर्श वातावरण की पूर्ति करता है। परिवार में सदस्यो के आपसी सम्बन्धो में सहसम्बन्ध का सकारात्मक प्रभाव किशोर छात्र-छात्राओं पर पड़ता है। बालक-बालिकाओं के अभिभावको और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सौर्हादपूर्ण सम्बन्ध उनके भावनात्मक और मानसिक पक्ष को सुदृढ़ बनाते है। बालक-बालिकाओं के मान सम्मान का ध्यान उनकी बुद्धि योग्यता में वृद्धि करता है। वे अपनी योग्यता से अध्ययन के प्रति धनात्मक विशुद्धि प्रदान करते है।

स्वास्थ्य क्षेत्र

सुखी जीवन के लिये स्वास्थ्य आवश्यक होता है स्वास्थ्य का तात्पर्य सिर्फ शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहने से नहीं है। किन्तु मानसिक, सामाजिक रूप से स्वस्थ्य होना भी आवश्यक है संपूर्ण स्वास्थ्य में बालक के सभी विकासात्मक कारक सम्मिलित होते है। स्वास्थ्य के लिये निम्न कारक प्रभाव डालतें है। जैसे- वंशानुक्रम, शारीरिक विभिन्नतायें, खानपान, रहन सहन, पारिवारिक स्वच्छता, पर्यावरण आदि। स्वस्थ्य व्यक्ति सामाजिक वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों में शीघ्र सामंजस्य स्थापित कर लेते है स्वस्थ्य व्यक्ति आसानी से दूसरों की भावनाओं और विचारों समझ लेते है।

विद्यालय क्षेत्र

विद्यालय समाज के द्वारा स्थापित बालको के ज्ञान संर्वद्धन की संस्था है। यहाँ बालकों को वांछित दिशा में प्रेरित करने के लिए वातावरण का निमार्ण करता है। जहाँ वह अपने आन्तिरिक शक्तियों का विकास करता है। विद्यालय संस्कृति के रक्षक और वाहक होते है। यह समाज का सच्चा प्रतिनिधित्व करते है। बालक में व्यवहारिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक है।

संवेगात्मक क्षेत्र

किशोर बालक-बालिकाओं मनः स्थिति अस्थिर होती है। संवेगो में अत्यधिक विभिन्नतायें होती है। कभी वे खिन्न और कभी उल्लास से परिपूर्ण होते है। किशोरो का स्वास्थ्य उनके व्यवहार को प्रभावित करता है। किशोरावस्था के आगमन का मुख्य चिन्ह संवेगात्मक क्रियाओं में तीव्र परिवर्तन है।

सामाजिक क्षेत्र

बालकों के विकास में समाज को परिवर्तन की धुरी माना जाता है । शिक्षा स्वमं भी सामाजिक परिवर्तन से परिवर्तित हो जाती है। सामाजिक परिवर्तन किसी न किसी कारक से प्रभावित होते है सामाजिक कारक निम्न परिस्थितियों में से प्रभावित हो सकतें है जैसे- भौगोलिक परिस्थितियाँ, जैविक परिस्थितियां, सांस्कृतिक परिस्थितियां, मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां, शैक्षिक परिस्थितियां, प्रौद्योगिक परिस्थितियां आदि।

अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की बदलती जीवन शैली और विद्यार्थीयों के व्यवहारिक परिवर्तन को देखकर शोध अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया। प्रतिस्पर्धा के दौर में बदलते शैक्षिक उददेश्यों के साथ माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों में किस प्रकार की सामंजस्य क्षमता में परिवर्तन को अपनाया। सामंजस्य जीवन में सफलता के लिए आवश्यक योग्यता है। किशोरावस्था बालक-बालिकाओं में परिवर्तन की अवस्था है। सामंजस्य के विभिन्न क्षेत्र होते है। शिक्षार्थियों के किशोरकाल में परिवार, स्वास्थ्य, संवेग, विद्यालय और समाज का प्रभाव प्रमुखता से पडता है। प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इसलिए है कि शासकीय विद्यालयों की कार्यप्रणाली में सशंय रहता है बदलते परिवेश में घटती छात्र-छात्रा संख्या ने और अधिक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। अशासकीय विद्यालयों की बडती संख्या और मनमानी में शिक्षार्थियों के विकास में योगदान को जानने के उद्देश्य से शोध का महत्व बढ़ जाता है। सामजस्य के विभिन्न क्षेत्र किस प्रकार उनकी क्षमता को प्रभावित करते है जानने की आवश्यकता शोध अध्ययन में की गयी है।

साहित्य समीक्षा

1. प्रजापति, हीरल.(2019) ने शोधपत्र में एकल और संयुक्त परिवार के छात्र-छात्राओ के बीच समायोजन स्तर का मापन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में संयुक्त परिवार के छात्रो में समायोजन की अधिक संभावनाए पायी गई। संयुक्त परिवारों का सौहाद्र पूर्ण वातावरण बालकों में सामंजस्य क्षमता और मानवीय मूल्यो में वृद्धि करता है। संयुक्त परिवारों में सभी सदस्य एक-दूसरे की साथ तारतम्य बैठाना सीख जाते हैं।

2. राज, सावित्री. (2018) शोध छात्रा ने अपने शोध अध्ययन में मध्य प्रदेश शासन द्वारा संचालित योजना के तहत शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े विकास खण्डो में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उददेश्य से बालिका छात्रावास योजना के अर्न्तगत छात्रावास में रह रही छात्राओं के भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षणिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया।
3. वाधवान, कोमपाल (2018) अध्ययन में शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एंव छात्राओं के, सामाजिक और शैक्षिक समायोजन स्तर का अध्ययन किया गया। सामाजिक समायोजन का स्तर पारिवारिक वातावरण से जुड़ा रहता है। जिन परिवारों में स्नेह व प्रेम का वातावरण होता है, वहां के बच्चे अधिक समायोजित होते है। संवेगात्मक स्थिरता और शैक्षिक समायोजन का आपस में महत्वपूर्ण संबंध है शैक्षिक समायोजन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सहायता करता हैं
4. निधि (2017) प्रस्तुत शोध अध्ययन में युवा छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव को जानने के लिये किया गया। लिंग के आधार पर सामंजस्य का स्तर छात्राओं का छात्रों से अधिक पाया गया।
5. बोरो, विरीना (2017) अपने शोध पत्र में उदालगिरी जिले के गोरखा समुदाय के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का मापन किया। लिंग के आधार पर छात्रायें शैक्षिक समायोजन में छात्रों से आगे रहती है। जिन परिवारों में विद्यार्थियों को विचारों को व्यक्त करने की आजादी होती है। वहाँ उनकी सामंजस्य क्षमता उत्तम होती है।
6. शेखर एवं लॉरेंस (2016) ने तमिलनाडु राज्य के तंजावुर जिले के लड़के और लड़कियों के सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन को लिंग के आधार पर अंतर जानने के लिये शोध कार्य किया है। शोध अध्ययन विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में तालमेल के लिये अध्यापको एवं अभिभावकों के समय समय पर निर्देशन उपलब्ध कराना चाहियें। किशोरावस्था में मनोवैज्ञानिक सहयोग बालको के विकास में सन्तुलित वृद्धि करता हैं।
7. येल्लाह. (2012) ने प्रस्तुत शोध पत्र में यह निष्कर्ष आया कि सामाजिक, शैक्षिक और संवेगात्मक समायोजन के आधार पर छात्रों में जो अन्तर पाया गया, वह केवल संवेगात्मक समायोजन में भिन्नता के आधार पर पाया गया। जबकि क्षेत्र, लिंग और विद्यालयों के प्रकार के आधार पर कोई अन्तर नहीं पाया गया।
8. गौड़, अनिता (2013) अध्ययन की परिकल्पना के परीक्षण में पाया कि निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं में गृह सामंजस्य में कोई सार्थक अंतर नही हैं। किन्तु स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक एवं विद्यालय सामंजस्य स्तर में सार्थक अंतर पाया गया।
9. सेल्वी, बी तामिल एंव राजगुरु, एस (2010) में किशोर छात्रो-छात्राओ घर और विद्यालय का पर्यावरण उनकी विकास अवस्था पर प्रमुख प्रभाव डालता है। इस अवस्था में विद्यार्थी घर, विद्यालय और समाज के साथ तालमेल में काफी समस्याओ का सामना करते है। अध्ययन में पाया गया कि छात्र घर, शिक्षा, समाज और भावनाओं का समायोजन उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।
10. मिश्र, नवीन कुमार (2010)42 अति सूक्ष्म जीवो से लेकर इस सृष्टि पर पाये जाने वाले सभी जीव अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिये बाहय और आन्तरिक वातावरण अथवा परिस्थितियों के साथ संघर्ष करते रहते है।

समस्या कथन उपरोक्त शोध महत्व व आवश्यकता के आधार पर निम्न समस्या कथन प्रस्तावित किया जाता है।

"माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में सामंजस्य का तुलनात्मक अध्ययन"

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

शासकीय माध्यमिक विद्यालय उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय जिनका प्रबन्धन और शिक्षकों की नियुक्ति राज्य शिक्षा परिषद द्वारा की जाती है

अशासकीय माध्यमिक विद्यालय अशासकीय माध्यमिक विद्यालय उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय से है। लेकिन इनका प्रबन्धन और शिक्षकों की नियुक्ति निजी प्रबन्धतंत्र द्वारा की जाती है।

सामंजस्य क्षमता सामंजस्य ऐसी क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं और वातावरण के बीच सन्तुलन स्थापित कर अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लेता है। समायोजित बालक आन्तरिक और बाहय वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित कर लेता है।

अध्ययन के उद्देश्य शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामजस्य क्षमता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामजस्य क्षमता में सार्थक अंतर नही है।

उपरोक्त परिकल्पना के आधार पर निम्न उपपरिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है।

1. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामजस्य क्षमता के क्षेत्र परिवार में सार्थक अंतर नही है।
2. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामजस्य क्षमता के क्षेत्र स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नही है।
3. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामजस्य क्षमता के क्षेत्र संवेगात्मक में सार्थक अंतर नही है।
4. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामजस्य क्षमता के क्षेत्र विद्यालय में सार्थक अंतर नही है।
5. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामजस्य क्षमता के क्षेत्र सामाजिक में सार्थक अंतर नही है।

अध्ययन का परिसीमा

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के झाँसी शहर तक सीमित है।
2. शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा मान्यता प्राप्त शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों को लिया गया है।
3. शोध जनसंख्या में कुल 600 शिक्षार्थियों को लिया गया है जिनका चयन कक्षा 9 वीं एवं 10 वीं से किया गया है।
4. शोध न्यादर्श में 300 शासकीय विद्यालय के 150 छात्र व 150 छात्राएं एवं 300 अशासकीय विद्यालय के 150 छात्र व 150 छात्राएं लिए गये है।

शोध विधि समंक संकलन में विद्यालय का चयन यादृच्छिक विधि एवं शिक्षार्थियों का चयन असम्भाव्य न्यादर्श के अंर्तगत सुविधानुसार न्यादर्श विधि के अनुसार किया गया है।

शोध उपकरण निम्न शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है। सामंजस्य अनुसूची में प्रत्येक क्षेत्र के प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है तथा प्रत्येक प्रश्न पर उत्तरदाता को अपनी प्रतिक्रिया हाँ अथवा नहीं में देनी होती है। सामंजस्य अनुसूची के भरने के लिए कोई समय सीमा निश्चित नहीं की गयी है।

सामंजस्य अनुसूचीं डा. अरून कुमार सिंह एंव डा. अल्पना सेन गुप्ता

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समंकों के साख्ंयकीय विश्लेषण में निम्न विधियाँ प्रयोग की गयी है।

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. प्रमाणिक विचलन त्रुटि
4. क्रान्तिक अनुपात

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

सारणी - 1

शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता का क्रान्तिक अनुपात परीक्षण सारणी

	N	M	SD	σD	CR	Df	.05	परिणाम
शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थी	300	67.06	17.42	1.30	2.16	598	1.96	अस्वीकृत
अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थी	300	64.29	14.43					

प्रस्तुत सारणी के अवलोकन से प्रदर्शित होता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षेत्र के समंकों का मध्यमान 67.06 एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षेत्र के समंकों का मध्यमान 64.29 है जबकि इन दोनो का प्रामाणिक विचलन क्रमशः 17.42 तथा 14.43 है तथा इनके क्रान्तिक अनुपात मानकीकृत सारणी के मुक्ताशं क ि(598) का मान 2.16 है। जो सार्थकता स्तर .05 स्तर पर सार्थक अंतर प्रदर्शित करता है इस आधार पर शून्य परिकल्पना शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृत की जाती है।

सारणी संख्या - 2

शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता के विभिन्न क्षेत्रों का क्रान्तिक अनुपात परीक्षण सारणी

सामंजस्य क्षेत्र	N	Types of school	M	SD	σD	CR	सार्थकता स्तर .05	परिणाम
परिवार	300	G	15.27	3.67	0.28	3.53	1.96	अस्वीकृत
	300	NG	14.28	3.47				
स्वास्थ्य	300	G	7.62	4.10	0.33	0.357	1.96	स्वीकृत
	300	NG	7.50	4.17				
संवेगात्मक	300	G	10.90	7.03	0.50	1.12	1.96	स्वीकृत
	300	NG	10.34	5.34				
विद्यालय	300	G	16.72	4.77	0.32	1.31	1.96	स्वीकृत
	300	NG	16.3	3.17				
सामाजिक	300	G	16.88	3.71	0.30	2.48	1.96	अस्वीकृत
	300	NG	16.12	3.87				

Df 598 *0.05 Significance Level

G-शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षाथी ,NG-अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थी

प्रस्तुत उपरोक्त सारणी संख्या 02 में दिए सामंजस्य क्षमता के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त मान के अनुसार सामंजस्य में सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर स्वतंत्रता की कोटि (DF 598- 1.96) के क्षेत्र परिवार में प्राप्त क्रान्तिक मान 3.53 प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर सामंजस्य के क्षेत्र परिवार में शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में सार्थक अंतर पाया गया है। उप परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

सामंजस्य क्षेत्र स्वास्थ्य में प्राप्त क्रान्तिक मान .357 प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर सामंजस्य के क्षेत्र स्वास्थ्य में शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में सार्थक अंतर पाया गया है। उप परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सामंजस्य क्षेत्र संवेगात्मक में प्राप्त क्रान्तिक मान 1.12 प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर सामंजस्य के क्षेत्र संवेगात्मक में शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में सार्थक अंतर नही पाया गया है। उप परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सामंजस्य क्षेत्र विद्यालय में प्राप्त क्रान्तिक मान 1.31 प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर सामंजस्य के क्षेत्र विद्यालय में शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में सार्थक अंतर नही पाया गया है। उप परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सामंजस्य क्षेत्र सामाजिक में प्राप्त क्रान्तिक मान 2.48 प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर सामंजस्य के क्षेत्र सामाजिक में शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में सार्थक अंतर पाया गया है। उप परिकल्पना "अस्वीकृत की जाती है।

आरेख संख्या 01

शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य क्षमता के माध्य की स्तम्भाकृति

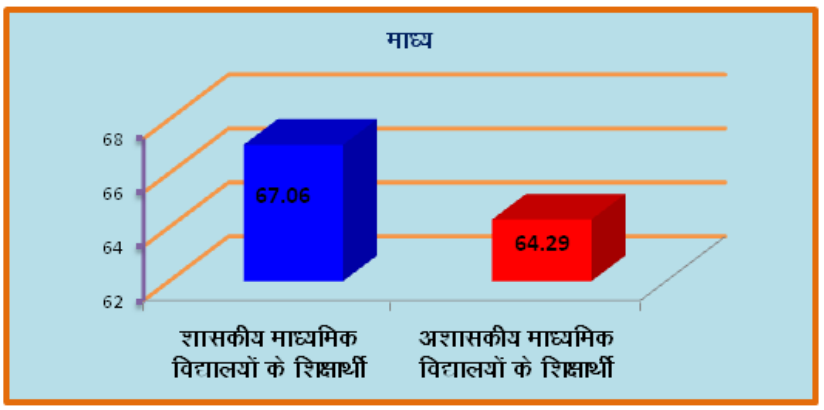

शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य क्षमता के प्रामाणिक विचलन की स्तम्भाकृति

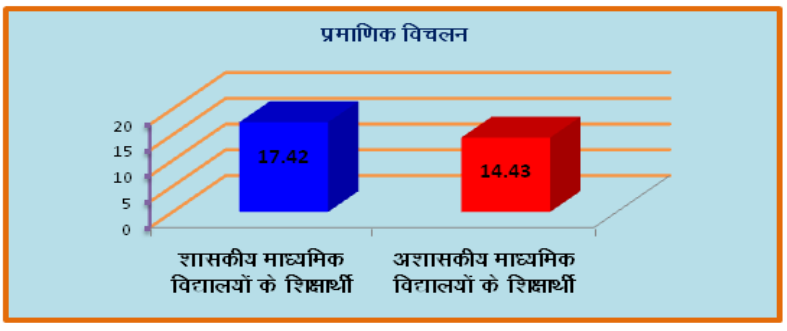

निष्कर्ष

शोध में प्राप्त परिणाम के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययन कर रहें शिक्षार्थियों के सामंजस्य का स्तर लगभग समान पाया गया है। क्षेत्र के आधार

पर परिवार और स्वास्थ्य के स्तर में अंतर आया है। जिसका कारण सामाजिक आर्थिक स्थिति में विभिन्नता हो सकता है। अभिभावकों का शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर शिक्षार्थियों को प्रभावित करता है।

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध के द्वारा शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययन कर रहे शिक्षार्थियों के जीवन स्तर का आंकलन किया जा सकता है। छात्र भविष्य का आधार है। शिक्षार्थियों के व्यक्तिव के विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सामंजस्य स्थापन के लिए भावी योजनाएं एवं पाठयक्रम में सुधार के लिए उपयोगी हो सकता है।

भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

भविष्य में शोध हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहें है।

1. लिंग के आधार पर सामंजस्य के क्षेत्रों का अध्ययन किया जा सकता है।
2. शहरी और ग्रामीण परिवेश में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की पृष्ठभमि के आधार पर अध्ययन किया जा सकता है।
3. वर्ग के आधार पर सामंजस्य क्षमता का अध्ययन किया जा सकता है।

नोट

यह शोधपत्र श्रंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका जर्नल के दिसम्बर २०२१ के अंक में प्रकाशित हो चुका है लेकिन कुछ संशोधन के साथ इसे इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Hiral, Prajapati.(2019) "Adjustment among high school students" The International Journal of Indian Psychology; 7(2); p-816-821, ISSN 2348-5396*
2. *राज, सावित्री.(2018) उच्चतर माध्यमिक स्तर के राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारासंचालित बालिका छात्रावासों का बालिकाओं के समायोजन एंव उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" पी-एच डी स्तरीय शोधग्रन्थ, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर*
3. *Wadhawan, Kompal. (2018) "A study of emotional, social' and educational adjustment af senior secondary students of Panchkula" The International Journal of Research in Social Science ; 8(4); P-793-803, ISSN 2249-2496*
4. *निधि (2017) एडजस्टमेंट प्रोबलम ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट इन रिलेशन टू जेंडर, सोशियांे इकोनोमिक स्टेट्स एण्ड ऐकेडमिक एचिवमेंट. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ करेन्ट रिसर्च ; 7(4) पृष्ठ 14574-14578*
5. *Boro, Birina.(2017) Adjustment problems of secondary school students of Gorkha community with respect to gender –A study: International Journal of Applied Research ; 3(8) ; P- 341-344, ISSN- 2394-7500*
6. *Sekar & Lawrance. (2016) Emotional, Social, Educational adjustment of higher secondary school students in relation to academic achievement: i-manager's Journal on Educational Psychology; 10(1); P-29-34*
7. *गौड़,अनिता. (2013) ग्वालियर शहर ,म0प्र0 के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उच्च और निम्न स्तर की समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन; एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडीसीप्लिनरी स्टडीः 1(4)पृष्ठ 67-71*
8. *येल्लाह (2012) "अ स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑन एकेडमिक एचिवमेंट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स"इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड इन्टरडिसीप्लिनरी रिसर्च ; 1(5) पृष्ठ 84-94*
9. *सेल्वी,बी तामिल एंव राजगुरु, एस (2010) "कॉलेज स्तर छात्रो की समायोजन समस्याओ एंव अकेडमिक उपलब्धि का अध्ययन"आई मेंनेजर जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजीः 4(1) पृष्ठ 45-51*
10. *मिश्र, नवीन कुमार (2010) "लखनऊ मंडल के अन्तर्गत नवोदय विद्यालयों एवं अन्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एवं समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन"पी-एच डी स्तरीय शोधग्रन्थ, डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद*